

What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 39

05/2017-18

MONTHLY

May 2017

LAST CHANCE.....!!!

VEDIC VIVAH MELA
(Matrimonial get together)
Saturday 20th May 2017
Book your place NOW.....!
(For more information see page 19 & 20)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM, B7 4SA
Tel: 0121 359 7727
E-mail– enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Three vows	By Mr Krishan Chopra 4
ऋषि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव	6
Sanskar – Annaprashana	9
Sciences in the Vedas	By Mr Krishan Chopra 12
सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तनरूप षडयन्त्र-३	आचार्य डॉ. उमेश यादव 14
Please save the original book ‘Satyarth Prakash’	17
Matrimonial Get Together 2017	19
Matrimonial Service	21
News (पारिवारिक समाचार)	22
Arya Samaj West Midlands New Home	25

For General and Matrimonial Enquiries

Please Ring

Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)

Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,

Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.

Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Three vows

देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्ययदूषिम । अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे
॥ अथर्ववेद ७.१०९.७

Devan yannathito huve brahmacaryam yadusim I aksan yad
babhrunalabhe te no mridantvidrse II

Atharva Veda 7.109.7

Meaning in Text Order

Devan = enlightened

Yat = whoever

Nathitah = tormented

Huve = invoke

Brahmacaryam = following the rules of celibacy

Yat = who

Usima = lived

Aksan = senses

Yat = who

Babhrun = attract to pleasures

Aalabhe = control them

Te = they

Nah = us

Mrdantu = be gracious

Idrishe = such type of actions.

Meaning - We invoke selfless divine people for our help in times of adversity. It is their nature to guide us without motive. We take the vow to follow the principle of penance in the period of student life keeping our

senses under control no matter whatever temptations and attractions come our way.

Contemplation - Comforts and sorrows are like the sun and shade in our life. When sorrows, grief and sadness appear on the horizon of our lives, then some wicked people show sympathy towards us and offer help to win us over so that we are indebted to them in the future. As a result, we are obliged to follow their path. We express thanks for the sympathy of wicked people but flatly refuse their help. When we are in trouble, we receive help from enlightened and wise whose practical life is pure and in a real sense they are those who show us the right path. We accept their help and feel fortunate to have their sympathy, guidance and best wishes. We know their advice will never guide us to an evil path.

My second vow is to observe in earnest, the worship of God and gain knowledge (Sarasvati) under the supervision and guidance of my preceptors in the dawn of my life. I consider it my duty that through penance and by following strict discipline, I acquire the knowledge of the Vedas and other scientific knowledge. A student will also observe the vow of study of the Vedas for the rest of their life. Our future success lies in the penance we observe in student life.

My third vow is the control of the senses. By nature our senses are prone to enjoyment, therefore I pledge to control my senses and mind. Great temptations and attractions will not break the control of my senses.

It is my humble prayer to God that the period of acquisition of knowledge and my control of the senses may become part and parcel of my life. This will keep me always happy, content and blissful.

By Mr Krishan Chopra



ऋषि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव

उपनिषद् वाक्य:- असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मांसमृतं गमय-शत.१४.३.१.३, बृहद् आ. १.२० अर्थात् हे प्रभो, आप हमें असत्य से हटाकर सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर एवं मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिये । आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर दृष्टिपात करने से हमें पता चलता है कि ये तीनों बातें उनके जीवन में घटित हुई थीं ।

असत्य से सत्य की ओर- शिवरात्री के दिन बालक मूलशंकर टंकारा के छोटे से शिव मन्दिर में शिव की मूर्ति के सामने विराजमान है । मन में संकल्प धारा हुआ है कि जिस शिव की आराधना एवं उपासना वो करने जा रहे हैं, वह अत्यन्त बलवान एव शक्तिशाली है और सब कुछ करने में वह समर्थ है । परन्तु अचानक जब एक चुहे को शिव की मूर्ति पर ताण्डव नृत्य करते देखते हैं तो सारा भ्रम दूर हो जाता है । जीवन में सत्य-असत्य का अन्तर समझ में आ जाता है । शिव रात्री की यह घटना ऋषि के जीवन में असत्य से सत्य की ओर जाने में पहला कदम थी ।

अन्धकार से प्रकाश की ओर- अंधकार अर्थात् अज्ञान । घर त्यागने के बाद

मूलशंकर शुद्ध चैतन्य बने । इसके बाद स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली और स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुये । इस अवधि में स्वामी दयानन्द जी ने बड़े-बड़े मन्दिरों, मठों, साधुओं तथा उनके डेरों आदि अनेक उन स्थानों को देखा जहाँ से उन्हें कुछ शिक्षा मिल सकती थी पर कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ । प्रत्येक व्यक्ति को “ लकीर का फकीर” ही पाया । मन्दिरों के बड़े पुजारी भाँग पीने और दूराचार करने में व्यस्त थे । धर्म के नाम पर मठों के महन्त औरतों से अपने पैर दबवाते थे । प्रकाश की कोई किरण नहीं दिखाई दे रही थी । हताश होकर दयानन्द स्वामी संपूर्णानन्द योगी से मिले । योग की अच्छी शिक्षा ली और उन्हीं से मथुरा के तत्कालीन वैदिक व्याकरण सूर्य स्वामी विरजानन्द के बारे में जान मथुरा की ओर निकल पड़े । मथुरा पहुँचकर दूर से एक कुटिया देखी । पूछने पर पता चला कि यही प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द की कुटिया है । वहाँ जाकर द्वार खटखटाया । अन्दर से आवाज आयी- कौन ? दयानन्द ने कहा-“ यही तो जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ ? दो संन्यासियों का संगम..... फिर एक गुरु और दूसरा चेला बना । इतिहास इस दिन को कभी नहीं भूलेगा कि इन दो संन्यासियों का संगम भारत के भाग्य बदलने के लिये हुआ था । गुरु से केवल ढाई वर्ष की वैदिक व्याकरण की शिक्षा पायी.... मानो वे अंधकार से निकलकर प्रकाश की ओर आ गये हों ।

मृत्यु से अमृत की ओर- जीवन भर देश, जाति (मानव जाति) और धर्म की सेवा की, कुरीतियों और पाखण्डों का खंडन करते रहे । लोगों ने पत्थर मारे, गालियाँ दीं, जहरें पिलाईं, अपमानित किया, यहाँ तक कि लोभ दिया, मजाक उड़ाया परन्तु दयानन्द जी पर्वत की तरह हमेशा अडिग रहे, घबराये नहीं, साहस नहीं छोड़ा, बस एक ईश्वर का आश्रय लिया । फिर दीपावलि की सन्ध्या में अपने आप को यह

कहते हुये प्रभु को समर्पित कर दिया -“ हे ईश्वर तूने अच्छी लीला की । तेरी ईच्छा पूर्ण हो ।” ऐसा कहते-कहते अपने प्राण विसर्जित कर दिये । यही उनका मृत्यु से अमृत की ओर जाना हुआ ।

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमने इस महान् योगी का जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव मनाया है । वास्तव में यह हमें ऐसा मनाना चाहिये कि कभी-कभी हमें अपने अन्दर झाँकने का प्रयत्न करना होगा तथा अन्तर्मन की गहराइयों तक जाने की कोशिश करनी होगी ।

भाइयों-बहनों, जरा विचार करें । ऋषि को बोध हुआ तो उन्होंने सत्य को जाना और सत्य धर्म का प्रचार किया । एक आर्य समाजी होते हुये हमें विचार करना चाहिये कि जिस ज्ञान-ज्योति व यज्ञ-ज्योति को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जलाया था, जिस सत्य को उन्होंने स्थापित किया था, आज हम उनके अनुयायी क्या कर रहे हैं ? क्या हमारा जीवन आर्य-भावना से भरा हुआ है ? क्या हम एक आदर्श आर्य समाजी बन पाये हैं ? ऋषि-ऋण चुकाने में अर्थात् वेद-प्रचार करने-कराने में हम कितना समय दे रहे हैं ? क्या हमने ऋषि के समान अन्यों के उत्थान के लिये तपस्या की है ? आदि... । यदि इन प्रश्नों के उत्तर “हाँ” में हैं तो ही आपका ऋषि-बोधोत्सव मनाना सार्थक माना जा सकेगा ।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा हम सबको अपार सामर्थ्य दे ताकि हम भी अपने-अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने में समर्थ हो सकें ।

भूपेन्द्र सन्धु बी.ए., एम. ए.

आयुर्वेदिक प्रैक्टिशनर व वैदिक पुरोहित

यू.के.-मॉरिशियन वैदिक एसोशियेशन, लन्दन

SACRAMENT **(7th SANSKAR)**

ANNAPRASHANA SACRAMENT

Annaprashana Sacrament is a scientific one. This is based on the biological science of a child's body.

Parents should perform this sacrament when the child's digestive system becomes capable to digest solid food items. According to Ashvalayan Grihyasutra 1.16.1, 4, 5. Annaprashana Sacrament should be performed when the child is six months old. It is important to understand that sixth month is the earliest parents can perform this Sacrament on their child. The child should be fed cooked rice mixed with Ghee (Clarified butter) or cooked rice mixed with honey, curd and Ghee after having performed this Sacrament. After this sacrament the mother can continue with breast feeding her child till child is one year old. Because mother's breast milk is always nutritious and good for a child. In second year of child parents should continue with cow or equivalent milk and gradually increasing amount of solid food. As the child becomes more older then parents should gradually increase the amount of solid food and decrease the amount of milk.

Proper amount of rice and Ghee are very nutritious to the child. When milk teeth start coming out then a child can chew the solid food and digest it well. Before child's milk teeth start coming out parents should feed cooked rice powder or blended cooked rice mixed with Ghee or honey and curd as written above.

As written above Annaprashana Sacrament is a natural and scientific act and is connected with the set up created by Almighty God.

Points to consider- For this Sacrament parents should prepared food for their child as following.

**Om Pranaay Twaa Jushtam Prokshami. Om Apaanaaya Twaa ---
---. Om Chachushe Twaa -----. Om Shrotryaa twaa -----. Om
Agnaye swishtakrite Twaa -----.**

The rice should be properly cleaned, washed and cooked. One should add reasonable amount of Ghee (clarified butter) while rice is still cooking. After the rice is properly cooked it should be cooled down and taken to the place where Havan is to be performed. Parents should perform Yajna- Havan by reciting Ishwar Stuti Prarthana (Prayer to God), Swastivachana, Shantikarna and complete Samanya Prakarna. When time comes to do Annaprashana Sacrament they should recite following Mantras and feed the child the pre prepared food.

Mantra - Om Annapate annasya no dehyanameevasya shushminah. Pra pra daataram taarish oorjam no dhehi dvipade – chatushpade. Yajurveda 11.83.

Meaning of this Mantra is - O the owner of this cereal Almighty God, please bless us with disease free and nutritious cereals (food). We pray to Almighty God to protect and help farmers who grow these cereals so that we continue receiving these cereals in plenty in future.

In Vedic literature the food items which are appropriate for human consumption are called Anna (Food or corn). Only the vegetarian food is acceptable. It is said “Payah Pashoonaam. Rasmaushadhinaam”. It means that food which does not contain milk, juice and medicine is called Anna and is always beneficial to human beings. Please remember that this Sacrament is named Annaprashana and not Meatprashna. Maharishi Dayanand Saraswati is in total agreement of the meaning of this Sacrament.

Parents should make sure that their children are brought up eating vegetarian food only right from the beginning of their life. Aaharshudhau Satwashudhah - Pure vegetarian food helps in development of pure intellect. There is a proverb (saying) in Hindi "Jaisa Khao Anna Vaisa bane Mann". For a virtuous and righteous, pure, happy and successful life, consumption (eating) of a vegetarian meal is very important. This is the teaching of Vedas.

Mahavaamdevyagaan - This is a well established practice of reciting and singing of Mantras in a certain way which creates an environment of happiness, religious and sacramented. This song is a rule in all Sacraments. By hearing this song all the present guests feel very happy and then under the guidance of a well qualified and learned priest they all bless the child.

For blessing the child in this Sacrament this sentence is very appropriate.

"Twamannpatirannadovardhmaano Bhooyaah." It means - **O child, in future you become the owner of Anna (food) and keep progressing in your life after eating these Anna.**

Here the guests are blessing the child with not just eating the Anna but also become owner of Anna in future. A person who becomes owner of Anna will also work hard in his/her life to earn money by honest means and then live comfortably and donate for the welfare of the society. This is what taught to us by our Vedic culture.

**Written by Acharya ji Dr Umesh Yadav in Hindi
and
Translated by Dr Narendra Kumar in English**

Sciences in the Vedas

In modern Physics, the research has taken place in the subjects such as Force, Motion, Energy, Power, Heat, Sound, Light, Magnetism, Electricity and Nuclear Energy etc. Among these most are related to fire. In the Vedas Agni represents Energy.

Energy is a power of Transmission. In the language of the Vedas it is "dudravat" it runs very fast. This form of energy (Power of Transmission) is the means of Radio and Television.

The waves of electricity are mentioned in the Vedas as "shrutkarna Urja" which describes regarding conversation from distance. The importance of Energy (Urjaa) has been mentioned in the Vedas at various places. In the Vedas, ten type of Energy (Urjaa) is described.

The Vedas also give sufficient knowledge about Chemistry. In Atharva Veda, there is mention of "agnishomo vibharti", here agni means Oxygen and soma means Hydrogen, both are present in water. The principle of water creation is mentioned in the mantra of Rig Veda – "mitram huve pootdaksham varunam cha rishaadsam I dhiyam ghritaachi saadhantaa" I in the language of Vedas Mitra is Oxygen and Varuna is Hydrogen. There is mention of the different qualities of water in the Vedas. The rain water is mentioned as "shatavrishnaya" which means hundred times of good qualities.

In Yajur Veda there is description of different qualities of water and it is used in different medicines. In Yajur Veda, Hydrogen is called "apaam rasah" and helium is "apaam rasasya yo rasah". There are many secret of water are mentioned in the Vedas. There is also

mention of many kinds of metals, chemicals, precious stone and semi- precious stones etc.

There are certain suktas as Nasdiya, Purush, Hiranyagarbhah, daakshiyaani and Visdhvakarmaa describe about the creation of the universe.

In Raamaayan, the description of Pushpak Vimaan and in Mahabharata, the mention of Agneya astra, Varunastra, Brahmaastra and description of battle of Mahabharta which was fought in kurukshetra and Sanjay's description in Hastinapur to Dhritrashtira are the evidence of developed technology in those days.

In Vedas, there is not only mention of different kinds of aeroplane but also the design of the piolet room, the description of front, middle and lower portion is also explained there.

The same way, there is mention of Mathematics which is the foundation of all sciences is also available. In Vedas, the counting up to ten trillion is available. There is also mention of numbers from 1 to 9, the value of Zero.

According to Rig Veda, a circle is divided into 360 parts. The sages took the inspiration from the Vedas and divided a year into twelve months, a week in seven days and a day in twenty four hours.

In Rig Veda, there is mention of summer and Winter solstices, the bright half of the lunar month and dark half of the lunar month. In Yajur Veda, there is a description of six seasons and in Atharva Veda, there is a mention of six months night and six months day in North Pole and South Pole.

By Krishan Chopra

ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तनरूप षडयन्त्र-३

महर्षि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा किये जा रहे परिवर्तनरूप षडयन्त्र से आर्य जनता परेशान है । इसकी कड़ी निन्दा की जाती है । आम जनता को भी सहजरूप से समझ आये कि यह सही में गलत हो रहा है; इसे हमें रोकना ही होगा । तन-मन-धन से हमें साथ जुड़ना होगा तभी यह परोपकारिणी सभा का घिनौना कार्य रुक सकेगा । पिछले अंकों की भाँति इस अंक में भी क्रमश कुछ विन्दु प्रस्तुत किये जा रहे हैं; इससे पाठकगण स्वयं वास्तविकता से अवगत हो जायेंगे । आप भी ईमेल कर परोपकारिणी सभा अजमेर पर इस घिनौने कार्य को रोकने का दबाव बनावें-ईमेल है- psabhaa@gmail.com

१. पृष्ट-१५ पर- मूल-" जैसे परमेश्वर के सत्य, न्याय, दया, सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञत्वादि अनंत गुण हैं वैसे अन्य किसी जड़ पदार्थ वा जीव के नहीं हैं ।"

परिवर्तन-" अन्य किसी जड़ वा जीव पदार्थ के नहीं हैं ।"

नोट- यहाँ ऋषि ने पहले ठीक लिखा है । पदार्थ शब्द जड़ के साथ ही आयेगा न कि जीव के साथ । जीव तो चेतन है जड़ नहीं । अतः

परिवर्तन उचित नहीं वल्कि सैधान्तिक हानि है ।

२. पृष्ट-१७ पर- मूल-" ऐसे ही यहाँ कि आप मेरी अवश्य रक्षा करो अर्थात् धर्म से सुनिश्चित और अधर्म से घृणा सदा करूँ ऐसी कृपा मुझ पर कीजिए ।"

परिवर्तन-" मेरी अवश्य रक्षा करो" में अवश्य और करो दो शब्द हटा दिये गये हैं जो सर्वथा निराधार है । अवश्य शब्द निश्चित ही ईश्वर और प्रार्थी

के बीच मजबूत सम्बन्ध बना रहा है । ईश्वरीय विश्वास की सुनिश्चितता ये दोनों शब्द प्रकट करने के सबल आधार हैं अतः ये दोनों शब्दों का हटा दिया जाना सर्वथा अनुचित है व निन्दनीय है ।

३. पृष्ठ-१९ पर-मूल- “ जब दुष्ट कर्म करने वाले जीव ईश्वर की न्यायरूपी व्यवस्था से दुःखरूप फल पाते तब रोते हैं और इसी प्रकार ईश्वर उन्हें रुलाता है, इसलिए परमेश्वर का नाम रुद्र है ।”

परिवर्तन- “जब दुष्ट कर्म करने वाले ईश्वर की व्यवस्था से....” यहाँ ऐसे लिखने से ऐसा लगता है कि ईश्वर ही दुष्ट कर्म करने वाला है, इस कारण ही महर्षि दयानन्द ने ईश्वर शब्द से पहले जीव शब्द लिखा क्योंकि दुष्ट कर्म जीव ही कर सकता है न कि ईश्वर । फिर “न्यायरूपी” शब्द भी हटा दिया गया जब कि ईश्वरीय व्यवस्था को न्यायरूपी कहना सर्वथा सार्थक होगा । अतः यहाँ भी परिवर्तन का कोई मतलब नहीं था ।

प्रिय पाठकगण ! उपरोक्त विवरण से आप स्वयं ही समझें कि परोपकारिणी सभा के लोग कितना गलत कार्य कर रहे हैं । ऐसा करना न रुका तो सत्यार्थ प्रकाश का मूल नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा फलतः आने वाली आर्य सन्तानों को बड़ी भारी सैद्धान्तिक हानि उठानी पड़ सकेगी । इसका निदान अभी आवश्यक है । अतः इस कार्य में आप तन-मन-धन से सहयोग करें । आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड इस कार्य में लगा हुआ है । इसके लिये कुछ धन की भी आवश्यकता है । आज ही आप भी दान राशि आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स को भेजें ताकि समय पर इसका सदुपयोग हो । जरा ध्यान से निम्न विवरण को पढ़ें, आपकी आँखें और खुल जायेंगी- एक प्रतिष्ठित आर्य विद्वान् आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा अपनी “मेरी प्रथम् दृष्टि में ऐतरेय ब्राह्मण विज्ञान” नामक पुस्तक के पृष्ठ ३२ पर

प्रस्तुत उद्गार से आपको इस किये जा रहे घिनौने कार्य की पुष्टि मिल जायेगी-

“वे महर्षि जी के सांकेतिक वेद भाष्य ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के जटिल प्रकरणों को तो क्या समझते, उनके सरलतम एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के विषय में भी भ्रान्ति के शिकार हो गये और इसी भ्रान्ति अथवा अहंकारवश न केवल सत्यार्थ प्रकाश में मनमाने परिवर्तन करने लगे अपितु महर्षि की भाषा, भावना, वैज्ञानिकता एवं दार्शनिकता पर भी प्रश्न खड़े करने लगे । हमने कभी भी आत्मनिरीक्षण करने का प्रयत्न नहीं किया, न किसी एक भी आर्ष ग्रन्थ का गम्भीर अध्ययन किया और न परमपिता परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण व सच्ची योगसाधना का ही अभ्यास किया और मात्र अपनी स्थूल बुद्धि के बल पर महर्षि भगवन्तों पर प्रश्न खड़े करने लगे । मेरे आर्य विद्वद् वन्धुओ, जरा विचारो, कि थोड़े से समय में ही आपने अपने आदर्श आचार्य महर्षि जी के सत्यार्थ प्रकाश की ये दुर्दशा कर दी और निरन्तर करते जा रहे हैं, तब आप आर्ष ग्रन्थों के हजारों वर्ष से चले आ रहे प्रक्षेपों, परिवर्तनों तथा प्रचलित पुराणरचयिताओं की निन्दा करने के अधिकारी कैसे हो सकते हैं ? सोचो, अपने आर्य समाज के संस्थापक आचार्य के आत्मा को कब तक दुःख दोगे ?”

निवेदन- इसे पढ़कर आप बैठे न रहें अपितु आवश्यक कार्यवाही में लग जायें; हमें उम्मीद है कि आप भी अवश्य अनुकूल प्रयास करेंगे ताकि यह निन्दनीय कार्य शीघ्रतादिशीघ्र रुक सके ।

आचार्य डॉ. उमेश यादव

PLEASE SAVE THE ORIGINAL BOOK **“SATYARTH PRAKASH”**

Dear Members of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Some office bearers of Paropkarini Sabha, Dayanand Ashram, Kesarganj, Ajmer-305001 (Rajasthan), India have made totally unnecessary distorted, mutilated and corrupt changes in the 37th, 38th, 39th and 40th edition of sacred book **“Satyarth Prakash”** written by Swami Dayanand Saraswati in year 1883 and printed as second edition in year 1884. These bad changes have destroyed the true meaning and knowledge contained in the book, as written and desired by the original writer Swami Dayanand Saraswati.

Since 1884 and till 1990 **“Satyarth Prakash”** has been printed as written by Swami Dayanand Saraswati in 1883. It is since year 1991 when Paropkarini Sabha office bearers started their unforgivable practice of altering the contents in **“Satyarth Prakash”** in name of modernising the language and improvement.

This sin is totally unforgivable and intolerable and to tolerate this happening is a bigger sin.

A true follower of Vedas and teachings of Maharishi Dayanand Saraswati can not tolerate these actions of few irresponsible officials of Paropkarini Sabha in India.

The case against these irresponsible individuals is pending in District Court of Ajmer, India.

The members of Arya Samaj community in India have already spent about £8000 on this case.

Now it is paramount duty of us to help the team fighting this court case in India with all the means at our disposal.

According to the present situation we need to collect about £10,000 to send to India.

So we appeal to all of you to donate generously towards this very worthy cause.

The office bearers of Arya Samaj West Midlands are committed to fight this just cause.

You can write to Paropkarini Sabha to express your views on **psabha@gmail.com**

We have to save the immortal book of “**Satyarth Prakash**” of Swami Dayanand Saraswati at any cost. It is our paramount duty to do this.

You can write the cheque in name of “**Arya Samaj West Midlands**” and post it to **Arya Samaj West Midlands, 188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA.**

Arya Samaj West Midlands will always be grateful for your contribution in this matter.

Yours sincerely

**Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees**

**Mrs. Brij Bala Duggal
Secretary
The Board of Trustees**

VEDIC VIVAH MELA Matrimonial Get Together and Speed Dating 2017

Date: Saturday 20th May 2017

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)
www.arya-samaj.org

Time: 11.30am – 5pm

Cost: - £20.00 Members and £30.00 Non-Members



This spring, we are hosting another popular speed dating matrimonial event on **Saturday 20th May**. It is the ideal opportunity to meet that special someone in a relaxed informal environment with like minded people who are all there for the same reason. Book your place early as numbers are limited. This year we are also inviting non-members to attend, so, if you have a friend who is interested please put them in touch and encourage them to register for the event.

Tickets - £20.00members/£30.00 non-members

How will it work?

We will have registration, welcome drinks, light snacks and mingling followed by speed dating where participants will meet each other for a period of 4 to 5 minutes. During this time, you will be able to chat

and find out about each other, when the time is up the bell will sound and you repeat the process with someone new. Make a note of the name of those you are interested in on the packs given on the day and we will send you their information by email for you to follow up. If you like someone there will be plenty of social time to chat further throughout the day. Once the speed dating is over a late vegetarian lunch with soft drinks will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event. (No alcohol is permitted or served)

What you need to do now?

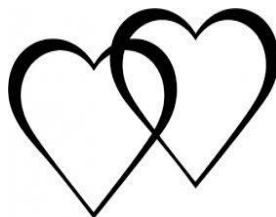
To attend this event, you will need to register by filling out the registration form. **Forms** are available on-line or by calling Arya Samaj West Midlands. Please complete and return your form no later than **Friday 12th May 2017** to confirm your place together with your cheques made payable to 'Arya Samaj West Midlands' **(Members £20/non-members £30)**. Send your payment and registration form including a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA.

You will be sent confirmation by post or email which you will need to bring with you. If you arrive on the day without an entry confirmation you will be unable to participate in the event.

We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!

Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. **0121 359 7727**

**Kind regards,
Arya Samaj WM, Matrimonial Team**



Matrimonial Service

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

Changes we have made in April 2017:

Website:-

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.
- Existing members will receive a letter in May with information about what we need from you to update your profile. Once you have received this letter please fill it out and send back to us soon as possible, so we can update our **NEW** data base and you can start using the new system.

Matrimonial Service:-

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.

News

Condolences:

- **Mr. H.R. Aggarwal and family for loss of his beloved wife Mrs. Surinder Kumari Aggarwal (65). May God grant the departed souls eternal peace and give strength to the family-members to bear the time of sorrow.**

Get Well Soon:

- **This is to inform our members and readers that our Patron Shri Gopal Chandra MBE is recovering in Ryland View Nursing Home, Arnhem Way, Tipton, DY4 7HR and telephone number 0121 520 1577. We all wish him a speedy recovery.**
- **This is to inform our members and readers that Mr Vishwa Nath Bhandari, ex-Vice President of Arya Samaj West Midlands year 2001-2003 is recovering in Gracewell of Edgbaston Care Home, Speedwell Road, Edgbaston, Birmingham, B5 7PR and telephone number 0121 796 0796. We all wish him a speedy recovery.**

Sponsors:

- **Mrs. Usha Thaper (Rugby) and family for being Yajman on Sunday 2nd April 2017 in Arya Samaj. Havan for 1st year death anniversary of her beloved husband Mr. Krishan Kumar Thaper**
- **Mrs. Prem Mangal and family for being Yajman on Sunday 9th April 2017 in Arya Samaj. Havan for 1st year death anniversary of her beloved brother Mr. Krishan Kumar Thaper**
- **Dr. P.D. Gupta and Mrs. Rekha Gupta for being Yajman on Sunday 19th March 2017 in Arya Samaj. Havan for peace and happiness in family.**

Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Donations to Arya Samaj West Midlands

- Dr. P.D. Gupta with Rishi Langar £101
 - Dr. Umesh Kathuria £11
 - Mr. Nimit Satish Oberoi £25
 - Mrs. Savita Satish Oberoi £11
- Guest from Bombay (India) visited to see Arya Samaj & yoga class held every Wednesday.
- Mrs. Usha Thaper with Rishi Langar £180
 - Mrs. Renu Vadhva & Mr. Vivek Vadhva with Rishi Langar £115
 - Mr. Andeep Mangal with Rishi Langar £520

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services.

- Dr. Pramod Sabharwal £50
- Mr. H.R. Aggarwal £100

Donations for save the original book "Satyarth Prakash"

- Mr Krishan Chopra £500
- Mr Raj Joy £11
- Mr V.P. Rawal £20
- Mrs Nirmal Prinja £50
- Mr. J.P. Sethi £50
- Acharya Dr. Umesh Yadav £100
- Mrs. & Mr. Anil Khosla £30
- Mr. Om Joshi £11
- Mr. Rajesh Salota £20

The following people have pledged:-

- Dr Narendra Kumar Indian Rupees One Lakh
- Mrs Brij Bala Duggal £250
- Dr P.D. Gupta Indian Rupees 10,000

Thank you for all your Donations!

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 7th May 2017 & 4th June 2017.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

Arya Samaj West Midlands **New Home**

Dear Members and Friends

Our present premises have been under "Compulsory Purchase Order" by High Speed Rail (HS2) since year 2012.

Since then we had several meetings with officials of HS2 and looked for various alternative sites.

Now I am very happy to inform you that we have found new premises for our Arya Samaj.

This is called Trinity Methodist Church, 321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.

The Department for Transport, London has approved our Business case to buy and refurbish the above building. This work will take good few months.

This building is in our community area and is located on bus route just outside the building.

We are getting funding for only half of the amount required for refurbishment. So in near future we will request you personally to donate some money in order to carry out total refurbishment requirement.

**Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees
Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands**